



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 158]

No. 158]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, जून 14, 2007/ज्येष्ठ 24, 1929

NEW DELHI, THURSDAY, JUNE 14, 2007/JYAISTHA 24, 1929

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 14 जून, 2007

अंतिम जांच परिणाम

(निर्णायक समीक्षा)

विषय : रूस एवं सऊदी अरब के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित हेक्सामाइन के आयातों से संबंधित पाटनरोधी (निर्णायक समीक्षा) जाँच ।

सं. 8/1/2001 (एसएसआर)-डीजीएडी.-वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति के निर्धारणार्थ) नियम, 1995 (जिसे एतदपश्चात नियम कहा गया है), को ध्यान में रखते हुए;

क. पृष्ठभूमि

2. यतः उपर्युक्त नियमों को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात प्राधिकारी भी कहा गया है) ने रूस एवं सऊदी अरब के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित हेक्सामाइन के समस्त आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करते हुए दिनांक 15.2.2002 की अधिसूचना सं० 8/1/2001-डी जी ए डी के जरिए अंतिम जांच परिणामों को अधिसूचित किया था । मूल जांच में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक जांच परिणाम दिनांक 15.5.2001 की अधिसूचना सं० 8/1/2001-डी जी ए डी के जरिए अधिसूचित किए गए थे । निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अंतिम जांच परिणाम दिनांक 15.2.2002 की अधिसूचना सं० 8/1/2001-डी जी ए डी के जरिए अधिसूचित किए गए थे और संबद्ध वस्तु पर अंतिम शुल्क का अधिरोपण दिनांक 27.3.2002 की सीमाशुल्क अधिसूचना सं० 31/2002-सी.शु. के जरिए किया गया था ।

3. निर्दिष्ट प्राधिकारी को उपर्युक्त अधिनियम के अनुच्छेद 9 क (5) के अनुसार मै0 सिमालिन केमिकल्स इंडस्ट्रीज प्रा0लि0, वड़ोदरा और मै0 कनौरिया केमिकल्स एंड इंडस्ट्रीज लि0, अंकलेश्वर से एक प्रमाणित आवेदन प्राप्त हुआ जिसमें इस आधार पर कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद पाटन जारी था और संबद्ध देशों से पाटन के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो रही थी, संबद्ध वस्तु पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा एवं अगले पाँच वर्षों तक उसे जारी रखने का अनुरोध किया गया था। यह भी दावा किया गया था कि घरेलू उद्योग को उचित राहत उपलब्ध कराने के लिए पाटनरोधी शुल्क पर्याप्त नहीं था और पाटनरोधी शुल्क के समाप्त हो जाने से घरेलू उद्योग को क्षति बढ़ जाएगी। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह जाँच करने के लिए कि क्या पाटनरोधी शुल्क समाप्त होने से पाटन, क्षति या दोनों के जारी रहने या पुनः प्रारंभ होने की संभावना है, पाटनरोधी (निर्णायक समीक्षा) जाँच शुरू करते हुए दिनांक 15.6.2006 का एक सार्वजनिक नोटिस सं0 8/1/2001 (एस एस आर)-डी जी ए डी जारी किया जो भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित हुआ।

ख. प्रक्रिया

4. इस जाँच में नीचे दी गई प्रक्रिया का पालन किया गया है:-

(i) समीक्षा शुरू करने के बाद प्राधिकारी ने संगत सूचना प्राप्त करने के लिए नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों/आयातकों को जाँच शुरूआत अधिसूचना की प्रति के साथ प्रश्नावली भेजी थी;

(ii) नियम के अनुसार संगत सूचना की मांग करते हुए भारत में घरेलू उद्योग को भी सूचना भेजी गई थी;

(iii) नियम 6(2) के अनुसार नई दिल्ली में संबद्ध देशों के राजदूतावासों को जाँच शुरूआत के संबंध में इस अनुरोध के साथ सूचना दी गई थी कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को विनिर्दिष्ट समय के भीतर प्रश्नावली का जवाब देने की सलाह दें।

(iv) सऊदी अरब के शाही दूतावास, नई दिल्ली ने मै0 सऊदी फॉर्मेलिडहाइड कं0 लि0 का एक पत्र अग्रेषित किया था जिसमें कहा गया था कि संबद्ध वस्तु पर शुल्क की अवधि को बढ़ाए जाने के पूर्व उन्हें अवसर प्रदान किया जाए। दूतावास से निर्यातक को यह सलाह देने का अनुरोध किया गया था कि वे निर्धारित प्रपत्र में अपेक्षित सूचना प्रस्तुत करें। दूतावास ने अपने दिनांक 22.2.2007 के पत्र के माध्यम से सूचित किया कि संबंधित निर्यातक को सलाह दे दी गई है। उसके बाद, निर्यातक या दूतावास द्वारा कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की गई थी।

(v) नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना की मांग करते हुए भारत में संबद्ध वस्तुओं के ज्ञात आयातकों एवं प्रयोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं।

(vi) संबद्ध देशों के किसी भी निर्यातक/उत्पादक तथा आयातक ने प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है।

(vii) जिन निर्यातकों, आयातकों/प्रयोक्ताओं तथा घरेलू विनिर्माताओं ने इस जांच के संबंध में सूचना प्रस्तुत नहीं की है, उन्हें असहयोगी निर्यातक, आयातक/प्रयोक्ता तथा घरेलू विनिर्माता माना गया है।

(viii) पिछले तीन वर्षों और जांच अवधि के लिए संबद्ध वस्तुओं के आयातों के ब्यौरे की व्यवस्था करने के लिए वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से अनुरोध किया गया था। घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत किए गए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सूचना सेवा (आई बी आई एस) से प्राप्त आंकड़ों का आई बी आई एस से सत्यापन किया गया था।

(ix) व्यापक परिचालन के लिए जांच शुरूआत अधिसूचना की प्रतियाँ एफ सी सी आई, सी आई आई तथा एसोचैम को भी भेजी गई थीं।

(x) संबद्ध वस्तु के घरेलू उत्पादक मै0 सिमालिन केमिकल्स इंडस्ट्रीज प्रा0 लि0, बड़ोदरा और मै0 कनौरिया केमिकल्स एंड इंडस्ट्रीज लि0, अंकलेश्वर ने सूचना/आंकड़े प्रस्तुत किए थे।

(xi) प्राधिकारी ने क्षति की जांच करने, भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने एवं बेचने की इष्टतम उत्पादन लागत निकालने और यह सुनिश्चित करने कि पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा, के लिए सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना का संभव सीमा तक सत्यापन किया।

(xii) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों की बात को मौखिक रूप से सुनने के लिए दिनांक 20 दिसम्बर, 2006 को सार्वजनिक सुनवाई की जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने वाले पक्षकारों से मौखिक रूप से प्रकट किए गए विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था। हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित प्रस्तुतीकरण पर निर्दिष्ट प्राधिकार द्वारा इस प्रकटन में विचार किया गया है।

(xiii) प्राधिकारी ने अनुरोध किए जाने पर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत सभी साक्ष्यों के अगोपनीय रूपान्तर वाली सार्वजनिक फाइल को सभी हितबद्ध पक्षकारों के लिए उपलब्ध रखा।

(xiv) जाँच शुरूआत अधिसूचना के उत्तर में तथा सार्वजनिक सुनवाई के बाद विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए विचारों पर संगत पैराग्राफों में उनके नियमों के संगत होने तथा मामले पर प्रभाव डालने की सीमा तक विचार किया गया है। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों की संगत पैराग्राफों में जाँच, उन पर विचार तथा उनका यथोचित समाधान किया गया है।

(xv) नियम 16 के अनुसार इन जांच परिणामों के लिए विचार किए गए आवश्यक तथ्यों/आधारों को ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों के समक्ष प्रकट किया गया है और उनसे प्राप्त टिप्पणियों पर जाँच परिणामों में विचार किया गया है।

(xvi) 1 अप्रैल, 2005 से शुरू होकर 31 मार्च, 2006 तक की अवधि (12 महीने) (पी ओ आई) के लिए जांच की गई थी। तथापि, क्षति विश्लेषण में अप्रैल, 2002 से मार्च, 2003; अप्रैल, 2003 से मार्च, 2004; अप्रैल 2004 से मार्च, 2005 और जांच अवधि शामिल थी।

(xvii) इस अधिसूचना में *** गोपनीय आधार पर आवेदक द्वारा प्रस्तुत और प्राधिकारी द्वारा नियमावली के अंतर्गत गोपनीय ही मानी गई सूचना को दर्शाता है।

ग. विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु

5. मूल जांच में शामिल उत्पाद हेक्सा मिथाइलीन टेटरामाइन था जिसे 'हेक्सामाइन' के नाम से भी जाना जाता है। अतः इस जांच के निर्णायक समीक्षा होने के कारण इसमें मूल जांच में शामिल उत्पाद ही शामिल है।

6. हेक्सामाइन मीठे धात्विक स्वाद वाला एक सफेद दानेदार पाउडर है। शुद्ध रूप में यह रंगहीन एवं गंधहीन होता है। हेक्सा मिथाइलीन टेटरामाइन को एम्मोफॉम, मिथामाइन, क्रिस्टामाइन, सिस्टोजेन, यूरोट्रोपीन के नाम से भी जाना जाता है। हेक्सामाइन का मुख्य उपयोग ठोस फेनॉलिक रेजिन्स के उत्पादन के लिए होता है। इसका उपयोग यूरिनरी एन्टीसेप्टिक, एड्हेसिव्स, कोटिंग, रंजक फिक्सचर, कैम्पिंग स्टोवों के लिए ईंधन टैब्लेट्स के रूप में भी होता है।

7. यह एक कार्बनिक रसायन है जो उक्त सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम और आई टी सी एच एस वर्गीकरण की प्रथम अनुसूची के अध्याय 29 के शीर्ष सं० 2921290 के तहत वर्गीकृत है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांच के दायरे पर बाध्यकारी नहीं है।

8. घरेलू उद्योग द्वारा भी समान गुणावगुणों एवं विनिर्देशनों वाले हेक्सामाइन का उत्पादन किया जाता है। विचाराधीन उत्पाद या समान वस्तु के मुद्दे पर किसी भी हितबद्ध पक्षकार द्वारा कोई तर्क नहीं दिया गया है और इसलिए प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित तथा संबद्ध देशों द्वारा विनिर्मित एवं निर्यातित उत्पाद पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (घ) के अनुसार समान वस्तुएँ हैं।

घ. घरेलू उद्योग

9. मूल जांच में पाटनरोधी जांच हेतु आवेदन घरेलू उद्योग की ओर से मै० सिमालिन केमिकल्स इंडस्ट्रीज प्रा० लि०, वड़ोदरा तथा मै० रॉकफोर्ड पेट्रोकेमिकल इंडस्ट्रीज लि०, इंदौर द्वारा प्रस्तुत किया गया था। वर्तमान निर्णायक समीक्षा में मै० सिमालिन केमिकल्स इंडस्ट्रीज प्रा० लि०, वड़ोदरा तथा मै० कनौरिया केमिकल्स एंड इंडस्ट्रीज लि०, अंकलेश्वर द्वारा सूचना/आंकड़े उपलब्ध कराए गए हैं। घरेलू उद्योग को क्षति के विश्लेषण के लिए मै० सिमालिन केमिकल्स इंडस्ट्रीज प्रा० लि०, वड़ोदरा और मै० कनौरिया केमिकल्स एण्ड इंडस्ट्रीज लि०, अंकलेश्वर द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों एवं सूचना पर विचार किया गया है।

ड. समीक्षा की शुरुआत एवं दिए गए तर्क

ड.1 आवेदक घरेलू उद्योग के विचार

10. घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि हेक्सामाइन पर पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बावजूद संबद्ध देशों से पाटन जारी रहा। पाटनरोधी शुल्क की मौजूदगी के बावजूद आयातों की मात्रा एवं कीमतों के स्तर, जिन पर भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया गया, को देखते हुए, इस बात की

संभावना है कि पाटनरोधी शुल्क को वापस लिए जाने की स्थिति में आयात की मात्रा में और वृद्धि होगी। निष्पादन की वर्तमान स्थिति के बारे में घरेलू उद्योग ने निवेदन किया कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से घरेलू उद्योग को अपना उत्पादन बनाए रखने तथा उसमें वृद्धि करने एवं क्षमता का इष्टतम स्तर तक उपयोग करने और अपनी बिक्री मात्रा को बनाए रखने में सहायता मिली है। आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की निवल बिक्री आय से बहुत कम है। लाभप्रदता के संबंध में उद्योग को कई वर्षों से प्रति इकाई घाटे का सामना करना पड़ रहा है। आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में अत्यधिक सीमा तक कटौती हो रही है और वर्तमान शुल्क को वापस लिए जाने पर कीमत कटौती में और वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त, विचाराधीन अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का निष्पादन पहले ही प्रतिकूल था और इस बात की संभावना है कि पाटनरोधी उपाय को वापस लिए जाने की परिणति घरेलू उद्योग को गहन क्षति के रूप में होगी। यह भी निवेदन किया गया है कि घरेलू उद्योग की मान्यता के अनुसार विचाराधीन उत्पाद के लिए रूस एवं सऊदी अरब में उत्पादन क्षमता उनकी घरेलू मांग से बहुत अधिक है। यदि वर्तमान उपाय को समाप्त होने दिया जाता है तो इस बात का खतरा है कि अप्रयुक्त उत्पादन क्षमता के एक बड़े हिस्से का उपयोग भारतीय बाजार में पाटन के लिए किया जाएगा।

ड.2 प्राधिकारी द्वारा जांच

11. घरेलू उद्योग को क्षति के जारी रहने संबंधी घरेलू उद्योग के तर्क को प्राधिकारी ने नोट किया है। घरेलू उद्योग को क्षति, पाटन तथा घरेलू उद्योग को क्षति के पुनः प्रारंभ होने के खतरे का विश्लेषण करते समय इन तर्कों पर विचार किया गया है।

घ. पाटन मार्जिन के परिकलन की प्रणाली

घ.1 पाटन निर्धारण: सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत एवं पाटन मार्जिन

घ.2 रूस के लिए सामान्य मूल्य

12. रूस से किसी भी निर्यातक ने सहयोग नहीं किया है और निर्यातक प्रश्नावली में निर्यातों और घरेलू बिक्रियों का ब्यौरा नहीं दिया है। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8(2) के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की पूर्वधारणा का भी खंडन नहीं किया गया है। पाटनरोधी नियमावली के पैरा 7 के अनुसार अन्य विकल्पों के बारे में संगत सूचना के अभाव में प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के अनुसार 'अन्य तर्कसंगत आधार' पद्धति अपनाकर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है।

13. उपर्युक्त के मद्देनजर, प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य की गणना अंतर्राष्ट्रीय कीमतों पर हेक्सामाइन के विनिर्माण हेतु कच्ची सामग्री और सुविधाओं, खपत संबंधी मानकों, घरेलू उद्योग के सक्षम भारतीय उत्पादकों की परिवर्तन लागत और अन्य लागतों को ध्यान में रखते हुए की है। इसके अलावा, सामान्य मूल्य की गणना हेतु 5 प्रतिशत की दर पर लाभ को इसमें जोड़ा गया है। उक्त उपलब्ध सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य की गणना *** रूपए/मी.टन या *** अम.डा./मी.टन के रूप में की गई है। जाँच अवधि के दौरान औसत विनिमय दर 1 अम.डा. = 44.41 रूपए मानी गयी है।

च.3 रूस के असहयोगी निर्यातकों हेतु निर्यात कीमत

14. रूसी निर्यातकों से निर्यात कीमत के बारे में किसी सूचना के अभाव में निर्यात कीमत का निर्धारण आई बी आई एस द्वारा प्रदत्त सौदावार ब्यौरों के आधार पर किया गया है। जाँच अवधि के दौरान रूस के लिए सी आई एफ कीमत *** रूपए/मी.टन (701.21 अम.डा./मी.टन) थी। अंतर्देशीय भाड़े, समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, कमीशन, पत्तन व्ययों और बैंक प्रभारों के लिए समायोजनों के पश्चात् रूस के लिए कारखाना द्वार निर्यात कीमत का परिकलन *** अम.डा./मी.टन के रूप में किया गया है (जाँच अवधि के दौरान 1 अम.डा. = 44.41 रूपए)

च.4 सऊदी अरब के लिए सामान्य मूल्य

15. सऊदी अरब से किसी भी निर्यातक ने निर्यात और घरेलू बिक्रियों के बारे में कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई है। किसी सूचना के अभाव में प्राधिकारी ने पाटमरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर सामान्य मूल्य की गणना की है।

16. उपर्युक्त के मद्देनजर, प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य की गणना अंतर्राष्ट्रीय कीमतों पर हेक्सामाइन के विनिर्माण हेतु कच्ची सामग्री और सुविधाओं, खपत संबंधी मानकों, घरेलू उद्योग के सक्षम भारतीय उत्पादकों की परिवर्तन लागत और अन्य लागतों को ध्यान में रखते हुए की है। इसके अलावा, सामान्य मूल्य की गणना हेतु 5 प्रतिशत की दर पर लाभ को इसमें जोड़ा गया है। उक्त उपलब्ध सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य की गणना *** रूपए/मी.टन या *** अम.डा./मी.टन के रूप में की गई है। जाँच अवधि के दौरान औसत विनिमय दर 1 अम.डा. = 44.41 रूपए मानी गयी है।

च.5 सऊदी अरब से असहयोगी निर्यातकों हेतु निर्यात कीमत

17. सऊदी अरब निर्यातकों से निर्यात कीमत के बारे में किसी सूचना के अभाव में निर्यात कीमत का निर्धारण आई बी आई एस द्वारा प्रदत्त सौदावार ब्यौरों के आधार पर किया गया है। जाँच अवधि के दौरान सऊदी अरब के लिए सी आई एफ कीमत *** रूपए/मी.टन (*** अम.डा./मी.टन) थी। अंतर्देशीय भाड़े, समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, कमीशन, पत्तन व्ययों और बैंक प्रभारों के लिए समायोजनों के पश्चात् सऊदी अरब के लिए कारखाना द्वार निर्यात कीमत का परिकलन *** अम.डा./मी.टन के रूप में किया गया है (जाँच अवधि के दौरान 1 अम.डा. = 44.41 रूपए)

च.6 पाटन मार्जिन

18. ऊपर यथा निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के आधार पर प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया है:-

पाटन मार्जिन

निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य अम.डा./मी.टन.	निर्यात कीमत अम.डा./मी.टन.	पाटन मार्जिन अम.डा./मी.टन.	पाटन मार्जिन %
रूस से सभी निर्यातक	***	***	***	38.09%
सऊदी अरब से सभी निर्यातक	***	***	***	34.57%

ऊपर परिकल्पित पाटन मार्जिन निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है।

छ. क्षति निर्धारण की पद्धति और कारणात्मक संबंध का निर्धारण**छ.1 क्षति जारी रहना****घरेलू उद्योग के विचारों का सारांश निम्नानुसार है**

19. पाटनरोधी शुल्क लागू होने से घरेलू उद्योग को उत्पादन, बिक्रियों और क्षमता उपयोग के उच्चतर स्तरों को बनाए रखने और उनमें वृद्धि करने में मदद मिली है। यदि पाटित आयात बाजार में उपलब्ध नहीं होते तो घरेलू उद्योग अपनी स्थिति में और सुधार कर सकता था। उत्पादन में वृद्धि के परिणामस्वरूप उत्पादकता में वृद्धि हुई है। पाटनरोधी शुल्क के बिना आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की निवल प्राप्ति से कम थी। शुल्क लागू होने के बाद भी घरेलू उद्योग बाजार में उचित कीमत प्राप्त करने में समर्थ नहीं था क्योंकि शुल्क छूट स्कीम के दुरुपयोग/गलत प्रयोग के कारण रूस और सऊदी अरब से पाटित आयात बाजार में काफी कम कीमतों पर उपलब्ध थे।

20. घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया कि उसे रूस से हेक्सामाइन के आयातों के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क लागू होने से कोई लाभ नहीं हुआ है क्योंकि शुल्क को बढ़ाकर 204.08 अम.डा. करने के सी एस टी ए टी के आदेश के बावजूद सीमाशुल्क प्राधिकरण रूसी निर्यातकों से पाटनरोधी शुल्क के रूप में केवल 3.77 अम.डा. प्रति मी.टन वसूल कर रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को ही क्षति उठानी पड़ी है और इस स्तर पर मौजूदा पाटनरोधी शुल्क हटाने से घरेलू उद्योग को अपना उत्पादन बंद करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। घरेलू उद्योग के नकद लाभ की स्थिति भी क्षति अवधि के दौरान अत्यधिक खराब हुई है, इसी प्रकार निवेश पर आय से भी अत्यधिक प्रतिकूल स्थितियाँ प्रदर्शित होती हैं।

छ.2 प्राधिकारी द्वारा जाँच

21. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संबंध में दिए गए विभिन्न तर्कों को नोट किया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि रूस और सऊदी अरब के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क लागू है। रूस और सऊदी अरब के संबंध में अपने अंतिम निर्धारण में प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया था कि संबद्ध देश से आयात पाटित कीमतों पर हुए थे। अतः क्षति और कारणात्मक संबंध के विश्लेषण के प्रयोजनार्थ संबद्ध देश से आयातों को पाटित आयात माना गया है।

22. पाटनरोधी नियमावली के अनुच्छेद 3.1 तथा पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में (क) पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में मूल्यों पर उनका प्रभाव, (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभावों की वस्तुनिष्ठ जांच का प्रावधान है। आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी द्वारा इस बात की जांच की जानी अपेक्षित है कि क्या आयातक सदस्य देश में समग्र रूप से अथवा उत्पादन अथवा खपत की तुलना में आयातों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। मूल्यों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात की जांच करनी आवश्यक समझी जाती है कि क्या भारत में समान वस्तु के मूल्य की तुलना में पाटित आयातों से मूल्यों में पर्याप्त गिरावट आई है अथवा क्या अन्यथा ऐसे आयातों का उद्देश्य मूल्यों को काफी हद तक कम करना है अथवा ऐसी मूल्य वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी हद तक बढ़ गई होती।

23. क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों के मात्रा एवं कीमत प्रभावों की जांच की है और क्षति एवं पाटन और क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की मौजूदगी की जांच हेतु कीमतों और लाभप्रदता पर उसके प्रभाव की जांच की है।

(क) मात्रात्मक प्रभाव: पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

24. संबद्ध देश से पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव की निम्नानुसार जांच की गई है:-

(i) आयात मात्रा और संबद्ध देश का हिस्सा

विवरण	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
आई बी आई एस के अनुसार आयात					
रूस	मी.टन	20			660
सऊदी अरब	मी.टन	-	60	440	558
संबद्ध देश	मी.टन	20	60	440	1,218
प्रवृत्ति (2002-03 को 100 मानते हुए)	सूचीबद्ध	100	300	2,200	6,092
देश जिस पर पहले से शुल्क लागू है (ईरान)	मी.टन	-	80	260	200
अन्य देश	मी.टन	-	118	103	167
कुल आयात	मी.टन	20	258	803	1,586
प्रवृत्ति (2002-03 को 100 मानते हुए)	सूचीबद्ध	100	1,290	4,015	7,928
आयात का बाजार हिस्सा					
रूस	%	100	-	-	42
सऊदी अरब	%	-	23	55	35
संबद्ध देश	%	100	23	55	77
देश जिस पर पहले से शुल्क लागू है (ईरान)	%	-	31	32	13
अन्य देश	%	-	46	13	11
कुल	%	100	100	100	100
मार्ग	मी.टन	8,365	10,108	11,356	12,224
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	121	136	146

उत्पादन	मी.टन	6,578	7,796	7,822	8,056
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	119	119	122
घरेलू बिक्रियां	मी.टन	6,592	7,535	7,997	7,739
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	114	121	117

25. प्राधिकारी ने डी जी सी आई एस द्वारा प्रदत्त आयातों के सौदावार ब्यौरों की जांच की है और इनकी तुलना अंतर्राष्ट्रीय व्यावसायिक सूचना सेवाएं (आई बी आई एस) द्वारा प्रदत्त आंकड़ों के साथ की है। तुलना करने पर यह पाया गया कि आयातों के सभी सौदे डी जी सी आई एस द्वारा प्रदत्त आंकड़ों पर नहीं किए गए हैं। जांच अवधि के दौरान डी जी सी आई एस द्वारा बताई गई आयातों की मात्रा 1016 मी.टन है। अंतर्राष्ट्रीय व्यावसायिक सूचना सेवाएं (आई बी आई एस) द्वारा प्रदत्त आयातों के सौदावार ब्यौरों से पता चलता है कि आयात डी जी सी आई एस द्वारा बताई गई मात्रा से अधिक मात्रा में हुए है। अतः विश्लेषण हेतु आई बी आई एस द्वारा प्रदत्त आंकड़ों पर भरोसा किया गया है। आई बी आई एस द्वारा प्रदत्त सूचना से यह प्रदर्शित होता है कि संबद्ध देशों से 1218 मी.टन मात्रा का आयात किया गया है और इसमें 2004-05 (440 मी.टन) और आधार वर्ष (20 मी.टन) की तुलना में जांच अवधि के दौरान अत्यधिक वृद्धि हुई है। इसी अवधि के दौरान सभी देशों से कुल आयातों में 20 मी.टन से 1586 मी.टन तक की वृद्धि हुई है। जांच अवधि के दौरान कुल आयातों में संबद्ध देश से हुए आयातों का हिस्सा 77 प्रतिशत था और अन्य देशों जिनका हिस्सा लगभग 11 प्रतिशत था, की तुलना में ईरान (जिस पर पहले से पाटनरोधी शुल्क लागू है) का हिस्सा 13 प्रतिशत था।

(ii) मांग, उत्पादन और बाजार हिस्सा

(क) घरेलू उद्योग का उत्पादन एवं क्षमता उपयोग

विवरण	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
क्षमता	मी.टन	7000	8000	8000	8000
प्रवृत्ति (2002-03 को 100 मानते हुए)	सूचीबद्ध	100	114	114	114
उत्पादन	मी.टन	6,578	7,796	7,822	8,056
प्रवृत्ति (2002-03 को 100 मानते हुए)	सूचीबद्ध	100	119	119	122
क्षमता उपयोग	%	94	97	98	101
प्रवृत्ति (2002-03 को 100 मानते हुए)	सूचीबद्ध	100	104	104	107

26. यह नोट किया गया है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की क्षमता में 14 प्रतिशत वृद्धि हुई है। आधार वर्ष की तुलना में उत्पादन में वृद्धि का रुख रहा है और इसमें जांच अवधि के दौरान 22 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। यह भी नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग ने आधार वर्ष से जांच अवधि के दौरान अपने क्षमता उपयोग में भी सुधार किया है। जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने अपनी संपूर्ण क्षमता का उपयोग किया है।

(ख) घरेलू उद्योग की बिक्रियाँ

विवरण	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
घरेलू बिक्रियाँ					
सिमांलिन	मी. टन	3,084	3,345	3,717	3,467
कनोरिया	मी. टन	3,508	4,190	4,280	4,273
कुल	मी. टन	6,592	7,535	7,997	7,739
प्रवृत्ति (2002-03 को 100 मानते हुए सूचीबद्ध)	सूचीबद्ध	100	114	121	117
घरेलू बिक्रियाँ	मी. टन				
सिमांलिन	मी. टन				
कनोरिया	मी. टन	20	40	116	-
कुल	मी. टन	20	40	116	-
प्रवृत्ति (2002-03 को 100 मानते हुए सूचीबद्ध)	सूचीबद्ध	100	200	580	-

27. आंकड़े यह दर्शाते हैं कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्रियों में वृद्धि हो रही थी और आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान इसमें 17% की वृद्धि हुई। कनोरिया कैमिकल ने 2002-03 से 2004-05 तक कुछ निर्यात किए थे तथापि जांच अवधि के दौरान कोई निर्यात नहीं किए गए हैं।

(ग) माँग एवं बाजार हिस्सा

विवरण	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
माँग					
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी. टन	6,592	7,535	7,997	7,739
अन्य उत्पादकों की बिक्री	मी. टन	1,753	2,315	2,556	2,899
संबद्ध देश से आयात	मी. टन	20	60	440	1,218
उस देश से आयात जिस पर पहले से पाटनसेधी शुल्क लागू है	मी. टन	-	80	260	200
अन्य देशों से आयात	मी. टन	-	118	103	167
माँग	मी. टन	8,365	10,108	11,356	12,224
प्रवृत्ति (2002-03 को 100 मानते हुए सूचीबद्ध)	सूचीबद्ध	100	121	136	146
माँग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	79	75	70	63
अन्य उत्पादक	%	21	23	23	24
संबद्ध देश	%	0	1	4	10
देश जिनपर शुल्क लागू है	%	-	1	2	2
अन्य देश	%	-	1	1	1
कुल	%	100	100	100	100

28. संबद्ध वस्तुओं की मांग का परिकलन घरेलू उद्योग अन्य उत्पादकों की घरेलू बिक्रियों और सभी देशों से आयातों को जोड़कर की गई है। आंकड़ों से यह पता चलता है कि माँग में वृद्धि में सकारात्मक रुझान रहा है और आधार वर्ष की तुलना में इसमें 46% की वृद्धि हुई है। आंकड़े यह भी प्रदर्शित करते हैं कि माँग में घरेलू उद्योग का हिस्सा आधार वर्ष में 79% की तुलना में जाँच अवधि के दौरान 63% था। अन्य उत्पादकों के हिस्से में आधार वर्ष के 21% से जाँच अवधि के दौरान 24% की वृद्धि हुई। संबद्ध देशों का हिस्सा 2004-05 और 2003-04 जिनमें यह क्रमशः 4% और 1% था, की तुलना में 4% और 1% था। यह नोट किया गया है कि जाँच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का हिस्सा घटकर 63% रह गया तथापि घरेलू उद्योग ने जाँच अवधि के दौरान अपनी क्षमता का पूरा उपयोग किया है।

(ख) घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

कीमत कटौती

विवरण	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
आयातों की पहुँच कीमत					
रुस	रु./मी. टन	27,190			35,857
सउदी अरब	रु./मी. टन	-	36,562	39,730	38,363
संबद्ध देश	रु./मी. टन	27,190	36,562	39,730	37,006
निवल बिक्री प्राप्ति- घरेलू उद्योग	रु./मी. टन	***	***	***	***
कीमत कटौती					
रुस	रु./मी. टन	***			***
सउदी अरब	रु./मी. टन		***	***	***
संबद्ध देश	रु./मी. टन	***	***	***	***
संबद्ध देश- रेंज					5-15%

29. संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों की जाँच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की भारित औसत उत्पादन लागत, भारित औसत निवल बिक्री प्राप्तियों (एनएसआर) और क्षति रहित कीमत (एनआईपी) की तुलना संबद्ध देशों से आयातों की पहुँच लागत के साथ की गई है।

30. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति के निर्धारण में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित छूटों और केन्द्रीय उत्पाद शुल्क को समायोजित किया गया है।

31. संबद्ध देशों से आयातों का पहुँच मूल्य जाँच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के लिए घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्तियों से कम था, इस प्रकार इससे घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में कटौती हो रही थी। जाँच अवधि के दौरान कटौती मार्जिन 5-15% के बीच था।

कम कीमत पर बिक्री

कम कीमत पर बिक्री	रू./ मी. टन
क्षतिरहित कीमत	***
पहुंच मूल्य (रूस)	***
पहुंच मूल्य (सदी अरब)	***
पहुंच मूल्य (संबद्ध देश)	***
कम कीमत पर बिक्री (रूस)	***
कम कीमत पर बिक्री (सदी अरब)	***
कम कीमत पर बिक्री संबद्ध देश	***
कम कीमत पर बिक्री (%)	***
कम कीमत पर बिक्री रेंज	15-25%

32. पाटित आयातों के कीमत हासकारी प्रभाव की जांच भी उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति और संबद्ध देश से पहुंच मूल्यों के संदर्भ में की गई है।

33. उत्पादन लागत की प्रवृत्ति से यह पता चलता है कि उत्पादन लागत में 2003-04 में 10%, 2004-05 में 14% और आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 12% की वृद्धि हुई। बिक्री कीमत में आधार वर्ष की तुलना में 2003-04 में 16% 2004-05 और जांच अवधि में 13% की वृद्धि हुई। संबद्ध देशों से आयातों में 2003-04 में 60 मी. टन और 2002-03 में 20 मी. टन की तुलना में 2004-05 में 440 मी. टन की वृद्धि हुई। बिक्री कीमत में 2003-04 में 16% की वृद्धि हुई जबकि इसी अवधि के दौरान उत्पादन लागत में 10% की वृद्धि हुई। बिक्री कीमत पर आयातों का हासकारी प्रभाव 2004-05 में स्पष्ट हो गया जब 2003-04 की तुलना में उत्पादन लागत में वृद्धि हुई जबकि बिक्री कीमत में 2003-04 की तुलना में 2004-05 में गिरावट आई थी।

34. कम कीमत पर बिक्री क्षति का आकलन का महत्वपूर्ण संकेतक है; इस प्रकार प्राधिकारी ने क्षति रहित कीमत की गणना की है और कम कीमत पर बिक्री की मात्रा ज्ञात करने के लिए इसकी तुलना पहुंच मूल्य के साथ की है। घरेलू उत्पादक के लिए क्षतिरहित कीमत का मूल्यांकन, जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के लिए उत्पादन लागत पर विचार करते हुए उचित ढंग से किया गया है। इस विश्लेषण से यह पता चलता है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु का भारित औसत पहुंच मूल्य जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित क्षतिरहित कीमत से कम है। जांच अवधि के दौरान कम कीमत पर बिक्री का मार्जिन 15-25% के बीच रहा था।

छ. 3. क्षति संबंधी अन्य मापदण्डों की जांच

35. घरेलू उद्योग की मात्रा और कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव और अन्य प्रमुख क्षति संबंधी संकेतकों जैसे घरेलू उद्योग की मात्रा, क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्रियों और पूर्ववर्ती खण्ड में विभिन्न तबकों के बाजार हिस्सों के साथ मांग की प्रवृत्ति, अन्य आर्थिक मापदण्डों जिनसे घरेलू उद्योग को

हुई क्षति की मौजूदगी का संकेत मिल सकता है, की जांच करने के पश्चात इनका विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है :

(i) लाभ और नकदी प्रवाह पर वास्तविक और संभावित लाभ

विवरण	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
उत्पादन लागत- घरेलू उद्योग	रु./मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति (2002-03 को 100 मानते हुए)	सूचीबद्ध	100	110	114	112
बिक्री कीमत- घरेलू उद्योग	रु./मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति (2002-03 को 100 मानते हुए)	सूचीबद्ध	100	116	113	113
लाभ/(हानि)- घरेलू उद्योग	रु./मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति (2002-03 को 100 मानते हुए)	सूचीबद्ध	(100)	289	(195)	(55)
लाभ/(हानि)- घरेलू उद्योग	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति (2002-03 को 100 मानते हुए)	सूचीबद्ध	(100)	330	(236)	(65)
नकद लाभ- घरेलू उद्योग	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति (2002-03 को 100 मानते हुए)	सूचीबद्ध	(100)	4,004	(1,186)	275

36. आंकड़ों से यह प्रदर्शित होता है कि आधार वर्ष की तुलना में बिक्री लागत में वर्ष 2003-04 में 10%, 2004-05 में 14% तथा जांच अवधि के दौरान 12% वृद्धि हुई थी। निवल बिक्री कीमत में आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2003-04 में 16%, वर्ष 2004-05 और जांच अवधि में 13% की वृद्धि हुई थी। वर्ष 2002-03 में हुई प्रति मी. टन की हानि वर्ष 2003-04 में लाभ में परिवर्तित हो गई, तथापि यह वर्ष 2004-05 तथा 2005-06 में फिर से हानि में परिवर्तित हो गई थी। इसी प्रकार वर्ष 2002-03 में घरेलू बिक्री में हुई हानि वर्ष 2003-04 में लाभ में वर्ष 2004-05 तथा 2005-06 में फिर हानि में परिवर्तित हो गई थी। यही प्रवृत्ति नकद लाभों में भी प्रदर्शित होती है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्ष 2004-05 तथा 2005-06 में संबद्ध वस्तुओं के आयातों में वृद्धि के प्रभाव से संबंधित है।

(ii) रोजगार एवं मजदूरी

विवरण	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
रोजगार					
सिमालिन	संख्या	***	***	***	***
कनोरिया	संख्या	***	***	***	***
कुल	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति (वर्ष 2002-03 को 100 मानते हुए सूचीबद्ध)	सूचीबद्ध	100	97	100	103
मजदूरी					
सिमालिन	लाख रु.	***	***	***	***

कनोरिया	लाख रु.	***	***	***	***
कुल	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति (वर्ष 2002-03 को 100 मानते हुए सूचीबद्ध)	सूचीबद्ध	100	103	104	107
प्रति मी. टन उत्पादन पर मजदूरी					
सिमालिन	रु.	***	***	***	***
कनोरिया	रु.	***	***	***	***
घरेलू उद्योग	रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति (वर्ष 2002-03 को 100 मानते हुए सूचीबद्ध)	सूचीबद्ध	100	87	87	88

37. आंकड़ों से प्रदर्शित होता है कि आधार वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग के कर्मचारियों की संख्या में जांच अवधि के दौरान 3% की वृद्धि हुई है। उसी अवधि के दौरान मजदूरी में 7% की वृद्धि हुई है।

(iii) उत्पादकता

विवरण	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
रोजगार					
सिमालिन	संख्या	***	***	***	***
कनोरिया	संख्या	***	***	***	***
कुल	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति (वर्ष 2002-03 को 100 मानते हुए सूचीबद्ध)	सूचीबद्ध	100	97	100	103
मजदूरी					
सिमालिन	मी. टन	***	***	***	***
कनोरिया	मी. टन	***	***	***	***
कुल	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति (वर्ष 2002-03 को 100 मानते हुए सूचीबद्ध)	सूचीबद्ध	100	119	119	122
प्रति कर्मचारी उत्पादकता					
सिमालिन	मी. टन	***	***	***	***
कनोरिया	मी. टन	***	***	***	***
घरेलू उद्योग	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति (वर्ष 2002-03 को 100 मानते हुए सूचीबद्ध)	सूचीबद्ध	100	122	119	119

38. आंकड़ों से पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में उत्पादकता अर्थात् घरेलू उद्योग के प्रति कर्मचारी उत्पादन में जांच अवधि के दौरान 19% की वृद्धि हुई थी।

(iv) वस्तु सूची

विवरण	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
औसत वस्तु सूची					
सिमालिन	मी. टन	***	***	***	***
कनोरिया	मी. टन	***	***	***	***
घरेलू उद्योग	मी. टन	***	***	***	***

प्रवृत्ति (वर्ष 2002-03 को 100 मानते हुए सूचीबद्ध)	सूचीबद्ध	100	152	133	140
बिक्री दिनों की संख्या के बराबर औसत वस्तु सूची	दिवस	10	13	10	11

39. औसत वस्तु सूची में समग्र अर्थों में वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान इसमें 40% तक की वृद्धि हुई है। बिक्री दिनों के संदर्भ में मापी गई औसत वस्तु सूची में यह प्रदर्शित होता है कि वर्ष 2003 में यह 10 दिनों के बराबर थी जो वर्ष 2004-05 में बढ़कर 11 दिन हो गई।

(v) लगाई गई पूंजी पर आय और पूंजी एकत्र करने की क्षमता

विवरण	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
लगाई गई पूंजी- निवल परिसंपत्तियों के आधार पर					
सिमालिन	लाख रु.	***	***	***	***
कनोरिया	लाख रु.	***	***	***	***
घरेलू उद्योग	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति (वर्ष 2002-03 को 100 मानते हुए सूचीबद्ध)	सूचीबद्ध	100	142	130	122
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ					
सिमालिन	लाख रु.	***	***	***	***
कनोरिया	लाख रु.	***	***	***	***
घरेलू उद्योग	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति (वर्ष 2002-03 को 100 मानते हुए सूचीबद्ध)	सूचीबद्ध	100	1,650	(451)	151
लगाई गई पूंजी पर आय					
सिमालिन	%	***	***	***	***
कनोरिया	%	***	***	***	***
घरेलू उद्योग	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति (वर्ष 2002-03 को 100 मानते हुए सूचीबद्ध)	सूचीबद्ध	100	1,159	(346)	124

40. आंकड़ों से पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लगाई गई पूंजी (निवल चल परिसंपत्ति आधार पर) 22% तक की वृद्धि हुई थी। वर्ष 2003-04 में घरेलू उद्योग द्वारा लगाई गई पूंजी पर आय नकारात्मक हो गई। तथापि, जांच अवधि के दौरान यह सकारात्मक थी।

(vi) कीमतों पर प्रभाव डालने वाले कारक

41. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्री लागत में वर्ष 2003-04 में 10%, वर्ष 2004-05 में 14% तथा जांच अवधि में 12% की वृद्धि हुई थी। वर्ष 2002-03 में रूस की निर्यात कीमत में गिरावट आई तथापि, वर्ष 2001-02 की तुलना में जांच अवधि के दौरान यह उच्च था। सउदी अरब की निर्यात कीमत में वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है और इसमें वर्ष 2003-04 की तुलना में वर्ष 2004-05 तथा वर्ष 2005-06 में वृद्धि हुई है। वर्ष 2002-03 में सीमाशुल्क 30% था जो जांच अवधि के दौरान घट कर 15% रह गया। तदनन्तर निर्यात कीमत और कम निर्यात कीमत का संयुक्त प्रभाव संबद्ध वस्तुओं के

पहुंच मूल्य पर भी पड़ा था। वर्ष 2002-03 की तुलना में जांच अवधि के दौरान रूस का पहुंच मूल्य अधिक था। वर्ष 2003-04 की तुलना में वर्ष 2004-05 में सउदी अरब के पहुंच मूल्य में वृद्धि हुई थी तथापि जांच अवधि के दौरान इसमें गिरावट आई थी। रूस से कीमत कटौती वर्ष 2002-03 तथा 2005-06 में सकारात्मक रही थी। वर्ष 2003-04 और 2004-05 के दौरान रूस से कोई आयात नहीं किए गए थे। वर्ष 2003-04, 2004-05 तथा जांच अवधि के दौरान सउदी अरब से कीमत कटौती सकारात्मक रही थी। वर्ष 2004-05 तथा वर्ष 2005-06 के दौरान संबद्ध देशों से आयातों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई जिससे घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत प्रभावित हुई थी।

(vii) पाटन की मात्रा

42. संबद्ध देशों अर्थात् रूस एवं सउदी अरब के लिए पाटन मार्जिन क्रमशः 42.66% तथा 39.02% पाया गया है।

(viii) वृद्धि

43. आंकड़ों के विश्लेषण से प्रदर्शित होता है कि संबद्ध वस्तुओं की मांग, उत्पादन बिक्री एवं उत्पादकता में सकारात्मक वृद्धि हुई थी। तथापि, वस्तु सूचियों, उत्पादन लागत, लाभ तथा लगाई गई पूंजी पर आय के संबंध में इसमें नकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित होती है।

छ.4. क्षति मानदण्डों के संबंध में निष्कर्ष

44. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की मांग में 46% की वृद्धि हुई थी। इसी अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता और उत्पादन में क्रमशः 14% और 22% का इजाफा किया। जांच अवधि के दौरान, घरेलू उद्योग ने अपनी पूरी क्षमता का उपयोग किया। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री में 17% की वृद्धि हुई तथापि जांच अवधि की तुलना में वर्ष 2004-05 में बिक्री अधिक थी। वर्ष 2004-05 तथा आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान औसत वस्तु सूची (बिक्री दिनों की संख्या के बराबर) उच्च थी। आधार वर्ष में 79% की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की मांग का हिस्सा घटकर 63% रह गया था। तथापि, आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान अन्य उत्पादकों का हिस्सा 24% तक बढ़ गया था। तथापि, जांच अवधि के दौरान हुई बिक्री वर्ष 2004-05 में हुई बिक्री से कम थी तथा जांच अवधि के दौरान औसत वस्तु सूची में वृद्धि हुई थी जिससे बिक्री में आई बाधाओं का संकेत मिलता है।

45. आधार वर्ष की तुलना में बिक्री लागत में वर्ष 2003-05 के दौरान 10%, वर्ष 2004-05 में 14% तथा जांच अवधि में 12% की वृद्धि हुई थी। आधार वर्ष की तुलना में निवल बिक्री कीमत में वर्ष 2003-04 में 16% तथा वर्ष 2004-05 एवं जांच अवधि में 13% की वृद्धि हुई थी तथापि निवल बिक्री कीमत में गिरावट आई थी। लाभप्रदता जो वर्ष 2003-04 में सकारात्मक थी, वह वर्ष 2004-05 एवं जांच अवधि में नकारात्मक हो गई थी। इसी प्रकार लाभ जो वर्ष 2003-04 में सकारात्मक थे, वे वर्ष 2004-05 एवं जांच अवधि में हानि में परिवर्तित हो गए थे। लगाई गई पूंजी पर आय वर्ष 2004-05 में नकारात्मक हो गई, तथापि जांच अवधि के दौरान यह किंचित सकारात्मक थी उपर उल्लिखित आर्थिक कारकों से यह संकेत मिलता है कि यद्यपि क्षमता उपयोग, उत्पादन एवं बिक्री में सुधार हुआ था तथा घरेलू उद्योग को वर्ष 2003-04 में सुधार के पश्चात् पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में वर्ष 2004-05 तथा 2005-06 में बिक्री कीमत तथा उत्पादन लागत में वृद्धि के कारण क्षति का सामना करना पड़ा था। ऊपर उल्लिखित मानदण्डों से संकेत

मिलता है कि घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन में सुधार के पश्चात वर्ष 2004-05 से गिरावट आने लगी थी जिससे यह संकेत मिलता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद घरेलू उद्योग को लगातार वास्तविक क्षति हो रही थी।

छ.5. अन्य ज्ञात कारक

(i) अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा एवं कीमतें

46. जांच अवधि के दौरान आयात मुख्यतः रूस एवं सउदी अरब से हुए हैं। जांच अवधि के दौरान हुए 1586 मी. टन के कुल आयातों में से 77% आयात संबद्ध देश से किए गए हैं। ईरान (जहां पहले से शुल्क लागू है) से 200 मी. टन एवं अन्य देशों से 167 मी. टन के आयात किए गए थे।

(ii) मांग में संकुचन तथा/अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन

47. संबद्ध वस्तुओं की कुल मांग में महत्वपूर्ण वृद्धि प्रदर्शित होती है। आधार वर्ष की तुलना में इसमें 46% की वृद्धि हुई अतः इस कारक को घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाला संभावित कारण नहीं माना जा सकता है।

(iii) विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों की व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां एवं उनके बीच प्रतिस्पर्धा

48. संबद्ध वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है और घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक उपाय मौजूद नहीं है। अतः इस कारक को घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाला कारण नहीं माना जा सकता।

(iv) प्रौद्योगिकी का विकास एवं निर्यात निष्पादन

49. किसी भी हितबद्ध पक्षकार द्वारा प्रौद्योगिकी अथवा प्रौद्योगिकी से संबंधित मुद्दों को घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का कारण नहीं ठहराया गया है। यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग आधार वर्ष 2002-03 से 2004-05 के दौरान कुछ मात्रा का निर्यात कर रहा था तथापि जांच अवधि के दौरान कोई निर्यात नहीं किए गए थे। चूंकि निर्यात, घरेलू बिक्री का अत्यंत छोटा हिस्सा है अतः इस कारक को घरेलू उद्योग के लिए क्षतिकारी नहीं माना जा सकता।

(v) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

50. घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार प्रदर्शित हुआ है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान इसमें 19% तक सुधार आया है।

छ.6. कारणात्मक संबंध

51. कारणात्मक संबंध के मामले में घरेलू पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों की जांच की गई है। घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति एवं पाटित आयातों के बीच कारणात्मक संबंध के विषय में विस्तृत जांच की गई थी। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II के पैरा (V) में निम्नानुसार निहित है :

यह निरूपित किया जाना चाहिए कि पाटित आयातों, पाटन के प्रभावों के द्वारा, जैसा कि उप- पैराग्राफ (ii) और (iv) में निहित है, घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा रहे हैं। पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का निरूपण निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष संगत कारकों की जांच पर आधारित होगा। निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटित आयातों के अलावा किन्हीं अन्य ज्ञात कारकों की भी जांच करेंगे जो, उसी अवधि में घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाते रहे हो और इन अन्य कारकों द्वारा पहुंचाई जा रही क्षति का कारण पाटित आयातों को नहीं माना जाना चाहिए। इस संबंध में संगत कारकों में, अन्य बातों के साथ-साथ शामिल हैं - पाटित कीमतों पर न बेचे जाने वाले आयातों की मात्रा एवं कीमतें, मांग में संकुचन अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन, विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां एवं प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी में विकास एवं निर्यात निष्पादन तथा घरेलू उद्योग की उत्पादकता।

52. जैसा कि ऊपर विचार किया गया है, घरेलू उद्योग को इन अन्य ज्ञात कारकों के कारण क्षति नहीं हुई है। यद्यपि पाटनरोधी शुल्क लागू था तब भी संबद्ध देशों से आयात निरंतर पाटित कीमतों पर उपलब्ध थे जिससे घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही थी और उन्हें घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमतों से निम्न कीमत पर बेचा जा रहा था। वर्ष 2002-03 (20 मी. टन) तथा 2003-04 (60 मी. टन) में संबद्ध देशों से आयात नगण्य थे, उसी अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में सुधार आया। वर्ष 2004-05 और वर्ष 2005-06 में संबद्ध देशों से बढ़े हुए आयातों का प्रभाव घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत पर भी पड़ना शुरू हो गया था। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग का लाभप्रदता, नकद लाभों और निवेश पर आय में क्षति हुई थी। उपर्युक्त विश्लेषण से संकेत मिलता है कि पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति के बीच कारणात्मक संबंध है।

ज. पाटन एवं क्षति की पुनरावृत्ति की संभावना

ज.1 पाटन की पुनरावृत्ति

53. पाटन की पुनरावृत्ति के संबंध में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित निवेदन किए हैं :-

1. वर्तमान एवं पूर्ववर्ती पाटन मार्जिन का स्तर

54. प्राधिकारी द्वारा पूर्ववर्ती जांच में निर्धारित पाटन मार्जिन और घरेलू उद्योग द्वारा अब आकलन किए गए पाटन मार्जिन को देखते हुए यह स्पष्ट है कि पाटनरोधी शुल्क को हटाए जाने से पाटन जारी रहने की संभावना है। वास्तव में इस बात को देखते हुए कि निर्यातक मुख्यतः इस उत्पाद के निर्यातों में लगे हुए हैं और आयात मात्राओं में निम्नलिखित प्रवृत्ति को देखते हुए पाटन में और अधिक वृद्धि होगी।

वर्ष	संबद्ध देशों से आयात मी.टन में
1999-00	88
2000-01	723
2001-02	344
2002-03	20
2003-04	60
2004-05	440
2005-06(जांच अवधि)	1,238

55. उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि (क) चालू पीओआई में आयातों की मात्रा पहले ही ऐसे स्तर पर थी जिसे अत्यधिक और वास्तविक क्षति पहुँचाने वाली कहा जा सकता है, अतः इस बात की आगे जाँच करने की कोई आवश्यकता नहीं है कि आयातों में और अधिक बढ़ोतरी होने की संभावना है, (ख) इस बात के दृष्टिगत कि पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने की स्थिति में सऊदी अरब से आयातों में और अधिक वृद्धि होगी, पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने की स्थिति में कीमत कटौती में अत्यधिक वृद्धि के मद्देनजर पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने की स्थिति में आयातों की मात्रा में और अधिक बढ़ोतरी होगी।

2. भारतीय बाजार की आकर्षक कीमतें

56. जिन कीमतों पर रूस और सऊदी अरब से भारत को माल का निर्यात किया जा रहा है, वे भी पाटन के जारी रहने की सूचक हैं। पहुँच कीमत (पाटनरोधी शुल्क के बगैर) पर अत्यधिक कटौती हुई है जैसाकि निम्नलिखित तालिका से देखा जाएगा :-

	सीआई एफ निर्यात कीमत		पहुँच कीमत		बिक्री कीमत	कीमत कटौती			
	स. अरब	रूस	स. अरब	रूस		शुल्क के साथ		शुल्क के बगैर	
					घरेलू उद्योग	स. अरब	रूस	स. अरब	रूस
1999-00	25.70	-	34.78	-	28.71	लागू नहीं	लागू नहीं	(4.54)	लागू नहीं
अप्रैल-सित., 2000	18.30	14.00	25.42	19.45	33.76	लागू नहीं	लागू नहीं	16.53	12.27
2000-01	25.79	22.02	35.82	30.58	37.67	लागू नहीं	लागू नहीं	1.86	7.09
2001-02	-	22.51	-	30.47	31.72	लागू नहीं	(12.12)	लागू नहीं	1.25
2002-03		21.08		27.46	36.14	लागू नहीं	8.49	लागू नहीं	8.67
2003-04	28.34	-	36.93	-	41.95	4.85	लागू नहीं	5.03	लागू नहीं
2004-05	33.38	-	40.13	-	40.82	0.53	लागू नहीं	0.7	लागू नहीं
2005-06	33.65	31.45	38.75	36.22	40.94	2.02	4.55	2.19	4.72

अतः पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने से भारतीय कीमतें विदेशी उत्पादकों और भारतीय उपभोक्ताओं के लिए इतनी अधिक आकर्षक हो जाएगी कि वे भारी मात्राओं में सौदा कर सकेंगे।

3. भारतीय उत्पादकों का निर्यातमुखीकरण

57. रूस और सऊदी अरब के निर्यातकों ने अपनी घरेलू मांग से कहीं अधिक फालतू क्षमताओं का निर्माण कर लिया है। निर्दिष्ट प्राधिकारी का ध्यान मै0 सऊदी फोरमलडिहाइडे केमिकल कं0लि0 (एसएफसीसीएल) (मूल जांच में) दाखिल किए गए प्रश्नावली जवाब के परिशिष्ट -7 की ओर आकर्षित किया जाता है जिसमें उन्होंने अपनी स्थापित क्षमता 5600 मी. टन प्रति वर्ष दिखायी है और यह स्वीकार किया है कि घरेलू बिक्रियों के लिए कोई बाजार नहीं है।

58. जहां तक रूस का संबंध है, बहुत सीमित प्रकाशित सूचना उपलब्ध है क्योंकि रूसी उत्पादक ऐसी सूचना को सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं करा रहे हैं। इसके बावजूद याचिकाकर्ता कम से कम एक उत्पादक और उसकी क्षमता संबंधी सूचना का पता लगाने में सक्षम रहा है। वांछित सूचना इन निवेदनों के साथ संलग्न है। यह देखा जाता है कि कम्पनी के पास 15,000 मी. टन की अत्यधिक क्षमता है।

59. अतः यह स्पष्ट है कि निर्यातक मुख्यतः संबंधित उत्पाद के निर्यातों में लगे हुए हैं और पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने से पाटन में और अधिक बढ़ोतरी होगी ।

60. उपर्युक्त के मद्देनजर घरेलू उद्योग का निवेदन है कि यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि सऊदी अरब और रूस से निर्यातक भारी मात्राओं में पाटित कीमतों पर माल का भारत को निर्यात करना जारी रखेंगे । इससे बाजार में उत्पाद का पाटन जारी रहेगा ।

ज.2 पाटन की पुनरावृत्ति के संबंध में प्राधिकारी द्वारा जांच

61. प्राधिकारी ने यह पाया है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयात पाटित कीमतों पर आ रहे थे और यह दिखाने के लिए रिकार्ड पर कोई सामग्री उपलब्ध नहीं है कि पाटन जारी नहीं रहेगा । मूल जांच और वर्तमान समीक्षा के दौरान पाटन मार्जिन की मौजूदगी से यह संकेत मिलता है कि संबद्ध देशों से पाटन के जारी रखने की संभावना है ।

ज.3 क्षति की पुनरावृत्ति

62. क्षति की पुनरावृत्ति के संबंध में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित निवेदन किए हैं :-

(क) घरेलू उद्योग की संवेदनशीलता

63. रूस और सऊदी अरब से उत्पादकों/निर्यातकों ने पाटित कीमतों पर निर्यात करना जारी रखा है । वर्तमान जांच एक समीक्षा जांच है और निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए यह जांच करना अपेक्षित है कि क्या शुल्क हटाए जाने से पाटन की पुनरावृत्ति होने की संभावना है । इस मामले में चूंकि पाटित आयातों का आना जारी है इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए यह जांच करना अपेक्षित है कि क्या शुल्क हटाए जाने से उत्पाद का पाटन जारी रहने की संभावना है । संबद्ध देशों से निर्यातक और आयातक भारत को संबद्ध उत्पादों का पिछले कई सालों से निर्यात कर रहे हैं । निर्यात न केवल भारत को किए जा रहे हैं बल्कि अन्य देशों को भी किए जा रहे हैं । इन देशों द्वारा विश्व के देशों को निर्यात की जा रही मात्रा बहुत अधिक है । वास्तव में सऊदी अरब शून्य घरेलू बिक्रियों के साथ समूची मात्राओं का निर्यात कर रहा है । स्पष्टतः रूस और सऊदी अरब में उत्पादकों के पास विचाराधीन उत्पाद की अत्यधिक अधिशेष/फालतू क्षमता है ।

64. शुल्क लगाने के बाद भी हो रहे निरंतर निर्यातों से स्पष्ट रूप से यह पता चलता है कि शुल्क हटाए जाने के पश्चात ज्यादा से ज्यादा निर्यात मात्राओं में बढ़ोतरी होगी । यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि शुल्क हटाए जाने के पश्चात निर्यातों में कमी होगी अथवा निर्यात कीमत में बढ़ोतरी होगी । निम्नलिखित मानदंडों से पता चलता है कि पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने की स्थिति में पाटन के जारी रहने की संभावना है ।

(ख) वर्तमान उपायों के साथ आयातों द्वारा अत्यधिक कीमत कटौती

65. संबद्ध देश से आयातों पर से शुल्क हटाए जाने की स्थिति में भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती होगी । पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को और अधिक क्षति होने की अत्यधिक संभावना है क्योंकि आयातित उत्पाद और घरेलू उद्योग के उत्पाद के बीच कीमत अंतर तब बहुत अधिक है जब घरेलू उद्योग अलाभकारी कीमतें प्रभारित कर रहा है ।

(ग) पाटन मार्जिन का स्तर

66. यह निवेदन किया गया है कि घरेलू उद्योग द्वारा की गई गणना के अनुसार पाटन मार्जिन पर्याप्त है।

ज.4 क्षति की पुनरावृत्ति के संबंध में प्राधिकारी द्वारा जांच

67. प्राधिकारी पहले ही घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति की मौजूदगी को साबित कर चुके हैं और घरेलू उद्योग की संवेदनशीलता के बारे में घरेलू उद्योग के तर्कों में निहित गुणावगुणों, अत्यधिक कीमत कटौती और पाटन मार्जिन के स्तर के मद्देनजर प्राधिकारी का विचार है कि यदि संबद्ध वस्तु पर से पाटनरोधी शुल्क हटाया जाता है तो संबद्ध वस्तु के पाटन के कारण क्षति के जारी रहने की संभावना है।

झ. अंतिम जांच परिणाम

68. पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात प्राधिकारी का विचार है कि :-

क. संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु का भारत को निर्यात उनके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है जिसके परिणामस्वरूप पाटन हुआ है;

(ख) पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है;

(ग) और संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क समाप्त करने के परिणामस्वरूप पाटन जारी रह सकता है और घरेलू उद्योग को क्षति जारी रह सकती है अथवा इसमें और बढ़ोतरी हो सकती है।

ज. भारतीय उद्योग का हित एवं अन्य मुद्दे

69. प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से भारत में उत्पाद के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं। तथापि, इन पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू करने से पाटन प्रथाओं द्वारा प्राप्त किए गए अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग का ह्रास रुकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं हेतु व्यापक पसंद की उपलब्धता बनाये रखने में मदद मिलेगी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों से संबद्ध देशों से आयात किसी भी तरीके से कम नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं हेतु उत्पाद की उपलब्धता पर असर नहीं पड़ेगा। उपभोक्ता तब भी दो या इससे भी अधिक आपूर्ति के स्रोत बनाये रख सकते हैं।

70. पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य आमतौर पर पाटन की अनुचित व्यापार प्रथाओं द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करना है ताकि भारतीय बाजार में उचित एवं खुली प्रतिस्पर्धा की स्थिति को पुनः स्थापित किया जा सके जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देश से आयात किसी भी तरीके से कम नहीं होंगे और इसलिए इससे उपभोक्ताओं हेतु उत्पाद की उपलब्धता पर असर नहीं पड़ेगा।

ट. सिफारिशें

71. संबद्ध देशों से आयातों के कारण पाटन और क्षति की संभावना के सकारात्मक निर्धारण के मद्देनजर प्राधिकारी का यह मत है कि संबद्ध देशों से आयातों के विरुद्ध उपाय को जारी रखना अपेक्षित है। तथापि संबद्ध देशों से पाटन के वर्तमान स्तर और घरेलू उद्योग को हुई क्षति पर विचार करते हुए प्राधिकारी का यह मत है कि लागू उपाय को संशोधित किए जाने की जरूरत है। अतः प्राधिकारी संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर नीचे विनिर्दिष्ट विधि एवं ढंग से पाटनरोधी शुल्क लगाने की अनुशंसा करना आवश्यक समझते हैं।

72. प्राधिकारी द्वारा अनुसरण किए गए कम शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन अथवा क्षति मार्जिन जो भी कम हो के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की अनुशंसा करते हैं ताकि घरेलू उद्योग की क्षति को दूर किया जा सके। प्राधिकारी रूस और सऊदी अरब के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की अनुशंसा करते हैं जैसाकि निम्नलिखित तालिका के कालम -8 में दर्शाया गया है।

क्र.सं.	टैरिफ मद्द	माल का विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	29212901	हेक्सामाइन	रूस	रूस	कोई	कोई	201.70	मी. टन	अम. डालर
2.	29212901	हेक्सामाइन	रूस	रूस से इतर कोई अन्य	कोई	कोई	201.70	मी. टन	अम. डालर
3.	29212901	हेक्सामाइन	संबद्ध देश से इतर कोई अन्य	रूस	कोई	कोई	201.70	मी. टन	अम. डालर
4.	29212901	हेक्सामाइन	सऊदी अरब	सऊदी अरब	कोई	कोई	145.29	मी. टन	अम. डालर
5.	29212901	हेक्सामाइन	सऊदी अरब	सऊदी अरब से इतर कोई अन्य	कोई	कोई	145.29	मी. टन	अम. डालर
6.	29212901	हेक्सामाइन	संबद्ध देश से इतर कोई अन्य	सऊदी अरब	कोई	कोई	145.29	मी. टन	अम. डालर

73. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुँच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अंतर्गत सीमाशुल्क विभाग द्वारा यथ आकलन योग्य मूल्य होगा और इसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी शुल्क शामिल होंगे।

74. इस आदेश के विरुद्ध अपील इस अधिनियम के संगत प्रावधानों के अनुसार सीमाशुल्क उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जा सकेगी।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 14th June, 2007

FINAL FINDINGS**(Sunset Review)**

Subject : Anti-Dumping (Sunset Review) Investigations concerning Imports of Hexamine originating in or exported from Russia and Saudi Arabia.

No. 8/1/2001 (SSR)-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, (hereinafter referred to as Act.) as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as Rules.);

A. BACKGROUND

2. WHEREAS, having regard to above Rules the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) notified final findings vide Notification No.8/1/2001-DGAD dated 15.2.2002 recommending imposition of anti-dumping duties on all imports of Hexamine originating in or exported from Russia and Saudi Arabia. In the original investigation the Preliminary findings were notified by the Designated Authority vide Notification No. 8/1/2001-DGAD dated 15.5.2001. Final findings of the Authority were notified by the Designated Authority vide Notification No. 8/1/2001-DGAD dated 15.2.2002 and the final duty was imposed on the subject goods vide Customs Notification No.31/2002-Cus. dated 27.3.2002.

3. The Designated Authority, in terms of section 9A (5) of said Act, received a substantiated application from M/s Simalin Chemicals Industries Pvt. Ltd., Vadodara and M/s Kanoria Chemicals & Industries Ltd., Ankleshwar requesting for review and continuation of the anti-dumping duties levied on the subject goods, for another five years on the grounds that the dumping had continued in spite of imposition of anti-dumping duty on imports of subject goods from subject countries and the domestic industry continued to suffer injury on account of dumping by the subject countries. It was also claimed that the anti-dumping duty was not sufficient to provide due relief to the domestic industry and cessation of anti-dumping duty would result in intensified injury to the domestic industry. The Designated Authority issued a public notice No. 8/1/2001(SSR)-DGAD dated 15.6.2006, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping (Sunset Review) investigations, to examine whether the expiry of anti dumping duty would lead to continuation or recurrence of dumping, injury or both.

B. PROCEDURE

4. In the proceedings the procedure described below has been followed:

- i) After initiation of the review the Authority sent questionnaires, along with the initiation notification, to the known exporters/producers in the subject country in accordance with the Rule 6(4), to elicit relevant information.

- ii) Notices were also sent to the domestic industry in India seeking relevant information in accordance with the Rules;
- iii) The Embassy of the subject countries in New Delhi were informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2), with a request to advise the exporters/producers in their country to respond to the questionnaire within the prescribed time.
- iv) Royal Embassy of Saudi Arabia, New Delhi forwarded a letter from M/s Saudi Formaldehyde Co. Ltd. stated that opportunity should have been given to them before extension of duty on subject goods. The Embassy was requested to advise the exporter to submit required information on the prescribed format. The Embassy vide their letter dated 22.2.2007 informed that the concerned exporter has been advised. No information from the exporter or the Embassy was submitted thereafter.
- v) Questionnaires were sent to the known importers and consumers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4),
- vi) No exporter/producer from subject countries and importer responded to the questionnaires.
- vii) The exporters, importers/users and domestic manufacturers who have not submitted any information in respect of this investigation have been treated as non-cooperating exporters, importers/users and domestic manufacturers.
- viii) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigations. The data provided by the domestic industry sourced from International Business Information Services (IBIS) was verified from IBIS.
- ix) Copies of the initiation notification were also sent to FICCI, CII and ASSOCHAM for wider circulation.
- x) M/s. Simalin Chemicals Industries Pvt. Ltd., Vadodara, and M/s Kanoria Chemicals & Industries Ltd., Ankleshwar the domestic producers of the subject goods submitted the information/data;
- xi) The Authority verified the information furnished by the domestic industry to the extent possible on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) to examine the injury suffered, to work out optimum cost of production, cost to make and sell the subject goods in India and so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;
- xii) The Authority held a public hearing on 20th December, 2006 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of the domestic industry. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. The written submissions received from interested parties have been considered by Designated Authority in this disclosure;
- xiii) The Authority made available the public file to all interested parties containing non-confidential version of all evidence submitted by various interested parties for inspection, upon request.
- xiv) The views expressed by various interested parties in response to the initiation notification and subsequent to the public hearing are discussed in the relevant paragraphs to the extent these are relevant as per rules and have a bearing upon the case. The arguments raised by the interested parties have been examined, considered and, wherever appropriate, dealt in relevant paragraphs.
- xv) In accordance with Rule 16 supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed on to known interested parties and comments received have been duly considered in the findings.

xvi) Investigations were carried out for the period of investigation (POI) from 1st April 2005 to 31st March 2006 (12 months). However injury analysis have been carried out for the years April 2002 – March 2003, April 2003 – March 2004, April 2005 – March 2006 and the period of investigation.

xvii) **** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the AD Rules.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

5. The product involved in the original investigation was Hexa Methylene Tetramine also known as 'Hexamine'. This being a Sunset review, therefore, the investigation covers the product covered in the original investigation.

6. Hexamine is a white crystalline powder with a sweet metallic tests. In the pure form, it is colourless and odourless. Hexa Methylene Tetramine compound is also known as Ammoform, Methenamine, Cystamine, Cystogen, Urotropine. The most important use of Hexamine is for production of solid phenolic resins. It is also used as a Urinary Antiseptic, Adhesives, Coating, Dye fixture, fuel tablets for camping stoves.

7. It is an organic chemical falling under heading No. 29212901 in Chapter 29 of the First Schedule to the said Customs Tariff Act and ITC HS Classification. This classification however, is indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation.

8. The domestic industry also produces Hexamine having similar characteristics and specifications. No argument has been extended, by any interested party, on the issue of product under consideration or like article and therefore, the Authority holds that the product being manufactured by the domestic industry and the product being manufactured and exported from the subject countries are like article as per Rule 2(d) of Anti-Dumping Rules.

D. DOMESTIC INDUSTRY

9. In the original investigation the application for anti-dumping investigation was filed by M/s. Simalin Chemicals Industries Pvt.Ltd. Vadodara, and M/s Rockford petro chemical Industries Ltd., Indore on behalf of the domestic industry. In the present sunset review the information/data has been provided by M/s Simalin Chemicals Industries Pvt. Ltd. , Vadodara and M/s Kanoria Chemicals & Industries Ltd, Ankleshwar. The data and information submitted by M/s Simalin Chemical Industries Pvt. Ltd and M/s Kanoria Chemicals & Industries Ltd. have been considered for analyzing the injury to the domestic industry.

E. INITIATION OF THE REVIEW AND ARGUMENTS RAISED

E.1 Views of Applicant Domestic Industry

10. Domestic industry has submitted that despite anti-dumping duty on Hexamine, dumping continued from the subject country. 'Given the volume of imports and level of prices at which the goods have been exported to India in spite of existence of anti-dumping duty, it is likely that volume of import would further increase in case anti-dumping duties are withdrawn.' Regarding present state of performance, the domestic industry submitted that imposition of anti-dumping duty has helped the domestic industry to maintain and increase their production and utilize capacity at an optimal level and

maintain its sales volume. Landing price of imports is significantly below the net sales realization of the domestic industry. Regarding profitability, the industry is facing significant per unit losses over the years. Imports are already undercutting the prices of domestic industry to a significant extent, should the present duty be revoked, the extent of price undercutting would further increase. Further, the performance of domestic industry was already adverse during the period under consideration and it is likely that revocation of anti-dumping measure would result in intensified injury to the domestic industry. It has also been submitted that as per understanding of the domestic industry the production capacity in Russia and Saudi Arabia for the product under consideration is higher than their domestic demand. Should the current measure be allowed to lapse, there is a threat that significant proportion of the unused production capability would be used to flood the Indian market.

E.2 Examination by the Authority

11. The Authority takes note of arguments raised by the domestic industry regarding continued injury to the domestic industry. These arguments have been taken into account while analyzing the injury to the domestic industry, threat of recurrence of dumping and injury to the domestic industry.

F. METHODOLOGY FOR CALCULATION OF DUMPING MARGIN

F.1 DUMPING DETERMINATION: NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN

F.2 Normal Value for Russia

12. No exporter from Russia has cooperated and provided information relating to exports and domestic sales on exporter's questionnaire. The presumption of non-market economy as para 8(2) of Annexure-1 of Anti-dumping Rules also remain unrebutted. In absence of relevant information about the other options as per para 7 of Anti-dumping Rules, the Authority has constructed normal value by adopting method 'other reasonable basis' as per facts available as per Rule 6(8) of Anti-dumping Rules.

13. In view of the above, the Authority has constructed the normal value by considering the raw material and utilities for manufacture of Hexamine at the international prices, the consumption norms, conversion cost and other costs of the efficient Indian producer of the domestic industry. In addition profit @5% has been added to construct the normal value. Based on above information available, the normal value has been calculated as Rs.***/MT or USD ***/MT. by considering the average exchange rate during POI of 1USD=Rs.44.41

F.3 Export Price for non-cooperating Russian exporters

14. In absence of any information about export price from Russian exporters, the export price has been determined on the basis of transaction-wise details provided by IBIS. During POI the CIF price was Rs.***/MT (US\$701.21/MT.) for Russia. After making adjustments on account of inland freight, ocean freight, marine insurance, Commission, port expenses and bank charges the ex-factory export price has been calculated as US\$ ***/MT for Russia (1 US\$ = Rs.44.41 during the POI).

F.4 Normal Value for Saudi Arabia

15. No exporter from Saudi Arabia has provided any information about export and

domestic sales. In absence of any information, the Authority has constructed the normal value on the basis of facts available as per Rule 6(8) of the Anti-dumping Rules.

16. In view of the above, the Authority has constructed the normal value by considering the raw material and utilities for manufacture of Hexamine at the international prices, the consumption norms, conversion cost and other costs of the efficient Indian producer of the domestic industry. In addition profit @5% has been added to construct the normal value. Based on above information available, the normal value has been calculated as Rs.***/MT or USD ***/MT. by considering the average exchange rate during POI of 1USD=Rs.44.41

F.5 Export Price for non-cooperating exporters from Saudi Arabia

17. In absence of any information about export price from exporters of Saudi Arabia, the export price has been determined on the basis of transaction-wise details provided by IBIS. During POI the CIF price was Rs.***/MT (US\$ ***/MT) for Saudi Arabia. After making adjustments on account of inland freight, ocean freight, marine insurance, Commission, port expenses and bank charges the ex-factory export price has been calculated as US\$ ***/MT for Saudi Arabia (1 US\$ = Rs.44.41 during the POI).

F.6 DUMPING MARGIN

18. Based on the normal value and export price as determined above, the Authority determined the dumping margin as under:

Dumping Margin

Exporter/Producer	Normal Value USD/MT	Export Price USD/MT	Dumping Margin USD/MT	Dumping Margin %
All exporters from Russia	***	***	***	38.09%
All exporters from Saudi Arabia	***	***	***	34.57%

The above calculated dumping margins are more than de minimis.

G. METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF CAUSAL LINK

INJURY DETERMINATION

G.1 CONTINUATION OF INJURY

Views of Domestic industry are summarized below

19. Imposition of anti-dumping duty has helped the domestic industry to maintain, and increase its production, sales and utilize capacity at higher levels. The domestic industry would have been able to improve itself further had the dumped import not been available in the market place. Increase in production resulted in increase in productivity. The landed price of imports without anti-dumping duty was below the net realization of the domestic industry. The domestic industry was not able to recover fair price from market even after imposition of duty as dumped imports from Russia and Saudi Arabia was available in market at significantly lower prices because of misuse/abuse of duty exemption scheme.

20. Domestic industry submitted that it did not have any benefit from imposition of Anti Dumping Duty against of imports of Hexamine from Russia as Customs Authorities continue to collect only US\$ 3.77 per MT from the Russian Exporters as the anti dumping duty in spite of CSTAT order for enhancing the duty to 204.08 US\$. This has only resulted in continued injury of the domestic industry and removal of existing Anti Dumping Duty at this stage would force the domestic industry to suspend their production. The cash profit of domestic industry have deteriorated significantly during injury period similarly, return on investment shows considerably adverse situation.

G.2 Examination by the Authority

21. The Authority has taken note of various arguments raised in regard to injury to the domestic industry. The Authority also notes that anti-dumping duty is in force against Russia and Saudi Arabia. In its final determination in respect of Russia and Saudi Arabia the Authority had determined that imports from subject country was at dumped prices. Therefore, for the purpose of injury and causal link analysis, the imports from subject country has been treated as dumped imports.

22. Article 3.1 of the ADA and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products, with regard to the volume effect of the dumped imports. The authorities are required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the authorities are required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

23. For the purpose of injury analysis the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any.

(A) VOLUME EFFECT: Volume effect of dumped imports and impact on domestic industry:

24. The effects of volume of dumped imports from subject country has been examined as follows:

i) Import Volume and share of the subject country:

Particulars	Units	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
Imports as per IBIS					
Russia	MT	20			660
Saudi Arabia	MT	-	60	440	558
Subject country	MT	20	60	440	1,218
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	300	2,200	6,092
Country already attracting duty(Iran)	MT	-	80	260	200

Other Country	MT	-	118	103	167
Total Imports	MT	20	258	803	1,586
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	1,290	4,015	7,928
Market share in Imports					
Russia	%	100	-	-	42
Saudi Arabia	%	-	23	55	35
Subject country	%	100	23	55	77
Country already attracting duty(Iran)	%	-	31	32	13
Other Country	%	-	46	13	11
Total	%	100	100	100	100
Demand	MT	8,365	10,108	11,356	12,224
Trend	Index	100	121	136	146
Production	MT	6,578	7,796	7,822	8,056
Trend	Index	100	119	119	122
Domestic Sales	MT	6,592	7,535	7,997	7,739
Trend	Index	100	114	121	117

25. The Authority has examined the transaction-wise details of imports provided by DGCIS and compared the same with the data provided by International Business Information Services (IBIS). On comparison it was found that all transaction of imports have not been captured in the data provided by DGCIS. The quantity of imports reported by DGCIS is 1016 MT during POI. The transaction-wise details of imports provided by International Business Information Services (IBIS) shows that imports have been higher than what has been reported by the DGCIS. Therefore, the data provided by the IBIS has been relied upon for analysis. Information provided by IBIS shows that imports from the subject countries were 1218 MT, and increased considerably during period of investigation as compared to 2004-05 (440 MT), and base year (20 MT). During the same period, total imports from all countries increased from 20MT to 1586 MT. Share of the subject countries in total imports during POI was 77%, and Iran (country already attracting antidumping duty) was 13% as compared to the other countries whose share was approximately 11%.

ii) Demand, Output and Market shares

a) Production & capacity utilization of the Domestic Industry

Particulars	Units	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
Capacity	MT	7000	8000	8000	8000
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	114	114	114
Production	MT	6,578	7,796	7,822	8,056
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	119	119	122
Capacity Utilisation	%	94	97	98	101
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	104	104	107

26. It has been noted that capacity of domestic industry has increased by 14% during POI as compared to the base year.. The production shows the rising trend, as compared to base year it had increased by 22% during POI. It has also been noted that the domestic industry has improved capacity utilization from base year to POI. During POI the domestic industry fully utilized its capacity.

b) Sales of Domestic Industry

Particulars	Units	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
Sales Domestic					
Simalin	MT	3,084	3,345	3,717	3,467
Kanoria	MT	3,508	4,190	4,280	4,273
Total	MT	6,592	7,535	7,997	7,739
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	114	121	117
Sales Export	MT				
Simalin	MT				
Kanoria	MT	20	40	116	-
Total	MT	20	40	116	-
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	200	580	-

27. The data shows that domestic sales of the domestic industry had been rising during injury period, As compared to base year it grew by 17% during POI. Kanoria chemical had some export from 2002-03 to 2004-05, however, during the POI no exports has been effected.

c) Demand and Market Share

Particulars	units	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
Demand					
Sale of Domestic Industry	MT	6,592	7,535	7,997	7,739
Sale of Other Producers	MT	1,753	2,315	2,556	2,899
Import from Subject Countries	MT	20	60	440	1,218
Import from Country already attracting duty	MT	-	80	260	200
Import from other countries	MT	-	118	103	167
Demand	MT	8,365	10,108	11,356	12,224
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	121	136	146
Market share in Demand					
Domestic Industry	%	79	75	70	63
Other Producers	%	21	23	23	24
Subject Countries	%	0	1	4	10
Country already attracting duty	%	-	1	2	2
Other country	%	-	1	1	1
Total	%	100	100	100	100

28. The demand of subject goods has been calculated by addition of domestic sales of domestic industry, other producers and imports from all the countries. The data show that growth in demand shows positive trend, it increased by 46% during POI as compared to the base year. Data also shows that the share of the domestic industry in demand was 63% during POI as compared to 79% in the base year. The share of other producer

grew from 21% in base year to 24% during POI. The share of subject countries increased to 10% during POI as compared to 2004-05 and 2003-04 when it was 4% and 1% respectively. It has been noted that the share of domestic industry declined to 63% during POI, however, the domestic industry had utilized its full capacity during the POI.

(B) Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

Price Undercutting

Particulars	units	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
Landed price of Imports					
Russia	RS./MT	27,190	-	-	35,857
Saudi Arabia	RS./MT	-	36,562	39,730	38,363
Subject Country	RS./MT	27,190	36,562	39,730	37,006
Net sales Realisation- Domestic Industry	RS./MT	***	***	***	***
Price Undercutting					
Russia	RS./MT	***			***
Saudi Arabia	RS./MT		***	***	***
Subject Countries	RS./MT	***	***	***	***
Subject countries - Range					5-15%

29. The impact on the prices of the domestic industry on account of dumped imports from the subject countries have been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realisation (NSR) and the Non-Injurious Price (NIP) of the domestic industry have been compared with landed cost of imports from the subject countries.

30. In determining the net sales realization of the domestic industry, the discounts offered by the domestic industry and the Central Excise Duty have been adjusted.

31. The landed value of imports from the subject countries was lower than the net sales realization of the domestic industry for the subject goods during the POI thereby, undercutting the selling price of the domestic industry. The undercutting margin was in the range of 5-15% during the POI.

Price Underselling

Price Underselling	Rs./MT
Non Injurious Price	***
Landed Value (Russia)	***
Landed Value (S. Arabia)	***
Landed Value (Subject countries)	***
Price Underselling (Russia)	***
Price Underselling (S. Arabia)	***
Price Underselling (Subject countries)	***

Price Underselling (%)	***
Price Underselling range	15-25%

32. The price suppression effect of the dumped imports has also been examined with reference to the cost of production, net sales realization and the landed values from the subject country.

33. The trend of cost of production shows that cost of production increased by 10% in 2003-04, 14% in 2004-05 and 12% during POI as compared to base year. The selling price increased by 16% in 2003-04, 13% in 2004-05 and POI as compared to base year. The imports from subject countries increased to 440 MT in 2004-05 as compared to 60 MT in 2003-04 and 20 MT in 2002-03. The selling price increased by 16% in 2003-04 as compared to increase of cost of production by 10% during the same period. The suppressing effect of imports on the selling price becomes apparent in 2004-05 when cost of production increased as compared to 2003-04 whereas the selling price declined in 2004-05 as compared to 2003-04.

34. The price underselling is an important indicator of assessment of injury; thus, the Authority has worked out a non injurious price and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been evaluated for the domestic producer by appropriately considering the cost of production for the product under consideration during the POI. The analysis shows that the weighted average landed value of the subject goods from subject countries is less than the non injurious price determined for the domestic industry during the period of investigation. The underselling margin was in the range of 15-25% during the POI.

G.3 Examination of other Injury Parameters

35. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments in the earlier section, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analysed hereunder as follows:

i) Profits and Actual and Potential Effects on Cash Flow

Particulars	Units	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
Cost of Production- Domestic Industry	RS./MT	***	***	***	***
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	110	114	112
Selling Price- Domestic Industry	RS./MT	***	***	***	***
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	116	113	113
Profit/(Loss)- Domestic Industry	RS./MT	***	***	***	***
Trend(Indexed taking 2002-03 as	Indexed	(100)	289	(195)	

100)					(55)
Profit/(Loss)- Domestic Industry	RS. Lacs	***	***	***	***
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	(100)	330	(236)	(65)
Cash Profit- Domestic Industry	RS. Lacs	***	***	***	***
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	(100)	4,004	(1,186)	275

36. The data shows that cost of sales increased by 10% in 2003-04, 14% in 2004-05 and 12% during POI as compared to base year. The net selling price increased by 16% in 2003-04, 13% in 2004-05 and POI as compared to base year. The loss per MT in 2002-03 turned in to profit in 2003-04, however, it again became loss in 2004-05 and 2005-06. Similarly, the losses on domestic sales in 2002-03 turned to profits in 2003-04 and again became loss in 2004-05 and 2005-06. The same trend is exhibited in the cash profits. The Authority notes that the loss per unit in 2004-05 and 2005-06 are relatable to impact of the increased in imports of subject goods in 2004-05 and 2005-06.

ii) Employment and Wages.

Particulars	Units	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
Employment					
Simalin	Nos	***	***	***	***
Kanoria	Nos	***	***	***	***
Total	Nos	***	***	***	***
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	97	100	103
Wages					
Simalin	RS. Lacs	***	***	***	***
Kanoria	RS. Lacs	***	***	***	***
Total	RS. Lacs	***	***	***	***
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	103	104	107
Wages per MT of production					
Simalin	RS	***	***	***	***
Kanoria	RS	***	***	***	***
Domestic Industry	RS	***	***	***	***
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	87	87	88

37. The data shows that number of employees of the domestic industry had increased by 3% during POI as compared to base year. The wages during the same period had increased by 7%.

iii) Productivity

Particulars	Units	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
-------------	-------	---------	---------	---------	---------

2789 GI/07-5

Employment					
Simalin	Nos	***	***	***	***
Kanoria	Nos	***	***	***	***
Total	Nos	***	***	***	***
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	97	100	103
Production					
Simalin	MT	***	***	***	***
Kanoria	MT	***	***	***	***
Total	MT	***	***	***	***
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	119	119	122
Productivity per Employee					
Simalin	MT	***	***	***	***
Kanoria	MT	***	***	***	***
Domestic Industry	MT	***	***	***	***
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	122	119	119

38. The data shows that the productivity i.e. production per employee of the domestic industry increased by 19% during POI as compared to base year.

iv) Inventories

Particulars	Units	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
Average Inventory					
Simalin	MT	***	***	***	***
Kanoria	MT	***	***	***	***
Domestic Industry	MT	***	***	***	***
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	152	133	140
Average Inventory equivalent to the No. of sale days	Days	10	13	10	11

39. The average inventory in absolute term shows rising trend. As compared to base year it had increased by 40% during POI. The average inventory measured in terms of sale days shows that it was equivalent to 10 days in 2003 and increased to 11 days in 2004-05.

v) Return on Capital Employed and Ability to Raise Capital

Particulars	Units	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
Capital Employed - Net Fixed Assets basis					
Simalin	RS. Lacs	***	***	***	***
Kanoria	RS. Lacs	***	***	***	***
Domestic Industry	RS. Lacs	***	***	***	***
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	142	130	122

Profit before interest and Tax					
Simalin	RS. Lacs	***	***	***	***
Kanoria	RS. Lacs	***	***	***	***
Domestic Industry	RS. Lacs	***	***	***	***
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	1,650	(451)	151
Return on Capital Employed					
Simalin	%	***	***	***	***
Kanoria	%	***	***	***	***
Domestic Industry	%	***	***	***	***
Trend(Indexed taking 2002-03 as 100)	Indexed	100	1,159	(346)	124

40. The data shows that the capital employed (Net Fixed Asset basis) of the domestic industry increased by 22% during POI as compared to base year. The return on capital employed of the domestic industry turned negative in 2003-04. However, it was positive during POI.

vi) Factors affecting prices

41. The cost of sale increased by 10% in 2003-04, 14% in 2004-05 and 12% during POI as compared to base year. The export price from Russia declined in 2002-03, however, it was higher during POI as compared to 2001-02. The export price from Saudi Arabia shows rising trend and increased in 2004-05 and 2005-06 as compared to 2003-04. The customs duty declined from 30% in 2002-03 to 15% during POI. The combined effect of export price and reduced customs duty consequently impacted the landed value of subject goods. Landed value from Russia was higher during POI as compared to 2002-03. The landed value from S. Arabia increased in 2004-05 as compared to 2003-04, however, it declined during POI. The price undercutting from Russia, was positive in 2002-03 and 2005-06. There was no imports from Russia during 2003-04 and 2004-05. The price undercutting from S. Arabia remained positive during 2003-04, 2004-05 and POI. The imports from subject countries increased considerably during 2004-05 and 2005-06, and impacted the net selling price of the domestic industry.

vii) Magnitude of Dumping

42. The dumping margin for the subject countries have been found out to be 42.66% and 39.02% for Russia and Saudi Arabia respectively.

viii) Growth

43. The evaluation of data shows there was positive growth in demand, production, sales and productivity of the subject goods. However, it shows negative growth in inventories, cost of production, profit and return on capital employed.

G.4 Conclusion on Injury Parameters

44. The demand of subject goods grew by 46% during POI as compared to base year. The domestic industry increased its capacity and production by 14% and 22% respectively during the same period. During the POI, the domestic industry utilized its full capacity. The sales of domestic industry increased by 17% during POI as compared to base year, however, the sale was higher during 2004-05 as compared to POI. The

average inventory (equivalent to No. of sale days) was higher during POI as compared to 2004-05 and base year. The share in demand of domestic industry declined to 63% during POI as compared to 79% in the base year. The share of other producers, however, increased to 24% during POI as compared to base year. The domestic industry utilized its full capacity during the POI. However, sale during POI was less than that of 2004-05 and average inventory risen during POI indicating constraints in sales.

45. The cost of sale increased by 10% in 2003-04, 14% in 2004-05 and 12% during POI as compared to base year. The net selling price increased by 16% in 2003-04 and 13% in 2004-05 and POI as compared to base year. In 2004-05, though there was increase in cost of sale, the net selling price declined. The profitability which was positive in 2003-04 turned negative in 2004-05 and POI. Similarly, profits which was positive in 2003-04 turned into losses in 2004-05 and POI. The return on capital employed turned negative in 2004-05, however, it was slightly positive during the POI. The above mentioned economic factors indicate that though there was improvement in utilization of the capacity, production and sales, the domestic industry after improving in 2003-04 started suffering losses in 2004-05 and 2005-06 because of decline in selling price and increase in the cost of production as compared to previous years. The above mentioned parameters indicate that performance of the domestic industry after showing improvement deteriorated from 2004-05 onwards indicating that domestic industry continued to suffer material injury despite the imposition of anti-dumping duty.

G.5 OTHERS KNOWN FACTORS

i) Volume and prices of imports from other sources

46. During the POI the imports have taken place mainly from Russia and Saudi Arabia. Out of total imports of 1586 MT during POI, 77% of imports have taken place from Subject country. There was imports of 200 MT from Iran (Country already attracting duty) and 167 MT from other countries.

ii) Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

47. The total demand of the subject goods shows significant growth. It increased by 46% during POI as compared to the base year, therefore, this factor is not possible reason which could have caused injury to the domestic industry.

iii) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

48. The subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. Therefore, this factor could not have been reason to cause injury to the domestic industry

iv) Development of technology and export performance

49. Technology or technology related issues have not been raised by any interested party as cause of injury to the domestic industry. It is noted that the domestic industry was exporting some quantity during the base year 2002-03 to 2004-05 however, during the POI there was no exports. As exports constitute very small portion of the domestic sales, therefore, this factor is not causing injury to the domestic industry.

v) Productivity of the Domestic Industry

50. Productivity of the domestic industry has shown improvement. It has improved by 19% during POI as compared to the base year.

G.6 CAUSAL LINK

51. The submissions made by interested parties in respect of the issue of causal link have been examined. A detailed examination was made with regards to the issues pertaining to the material injury to the domestic industry and causal link between the material injury to the domestic industry and dumped imports. Paragraph (v) of Annexure II of the Anti-dumping Rules reads as under:

" It must be demonstrated that the dumped imports are, through the effects of dumping, as set forth in paragraphs (ii) and (iv) above, causing injury to the domestic industry. The demonstration of a causal relationship between the dumped imports and the injury to the domestic industry shall be based on an examination of relevant evidence before the designated authority. The designated authority shall also examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry, and the injury caused by these other factors must not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, inter alia, the volume and prices of imports not sold at dumping prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry."

52. As discussed above, the injury to the domestic industry is not caused by these other known factors. Though the anti-dumping duty was in force even then the imports from subject countries continued to be available in dumped prices which was undercutting prices of domestic industry and was being sold at prices below the non-injurious prices of the domestic industry. The imports from subject countries were negligible in 2002-03 (20 MT) and 2003-04 (60 MT), the performance of the domestic industry improved during the same period. In 2004-05 and 2005-06 with the increased imports from subject countries started impacting the net selling price of the domestic industry. Consequently, the domestic industry suffered in profitability, cash profits and return on investment. The above analysis indicate that there is causal link between dumped imports and material injury to the domestic industry.

H. LIKELIHOOD OF RECURRENCE OF DUMPING AND INJURY

H.1 Recurrence of Dumping

53. The domestic industry has made following submissions regarding recurrence of dumping:

1. Level of current and past dumping margin

54. Given the dumping margin determined by the Authority in the previous investigation and the dumping margin now assessed by the domestic industry, it is evident that the dumping is likely to continue with revocation of anti dumping duties. In fact, dumping would only intensify, given that the exporters are largely engaged in exports of the product, given the following trend in import volumes.

Year	Imports from Subject Countries in MT
1999-00	88
2000-01	723
2001-02	344
2002-03	20
2003-04	60
2004-05	440
2005-06(POI)	1,238

55. It is evident from the above that (a) volume of imports in the current POI were already at such level so as to be labeled significant and causing material injury, thus requiring no further investigation that the imports are likely to increase further, (b) the volume of imports is likely to increase further in the event of revocation of anti dumping duties, given that imports from Saudi would increase further in the event of revocation of anti dumping duties, given the significant increase in price undercutting in the event of revocation of anti dumping duties.

2. Price attractiveness of Indian market

56. The prices at which material is being exported by Russia and Saudi Arabia to India are also an indicator of the continuation of dumping. At the landed price (without anti dumping duty) there is significant undercutting, as would be seen from the table below:-

	CIF export price		Landed price		Selling price D. I.	Price undercutting			
	S. Arabia	Russia	S. Arabia	Russia		With duty		Without duty	
						S. Arabia	Russia	S. Arabia	Russia
1999-00	25.70	-	34.78	-	28.71	N.A.	N.A.	(4.54)	N.A.
Apr.-Sept., 2000	18.30	14.00	25.42	19.45	33.76	N.A.	N.A.	16.53	12.27
2000-01	25.79	22.02	35.82	30.58	37.67	N.A.	N.A.	1.86	7.09
2001-02	-	22.51	-	30.47	31.72	N.A.	(12.12)	N.A.	1.25
2002-03		21.08		27.46	36.14	N.A.	8.49	N.A.	8.67
2003-04	28.34	-	36.93	-	41.95	4.85	N.A.	5.03	N.A.
2004-05	33.38	-	40.13	-	40.82	0.53	N.A.	0.7	N.A.
2005-06	33.65	31.45	38.75	36.22	40.94	2.02	4.55	2.19	4.72

Thus, with the revocation of anti dumping duties, the Indian prices would be too attractive to the Foreign Producers and Indian Consumers to transact significant volumes.

3. Export orientation of foreign producers

57. Exporters in Russia and Saudi Arabia have built capacities far in excess of their domestic demand. Kind attention of the Designated Authority is invited to Appendix-7 of questionnaire response filed by M/s. Saudi Formaldehyde Chemical Company Ltd. (SFCCL) (in the original investigation) wherein they have shown their Installed Capacity as 5600 MT per annum and admitted that there is no market for domestic sales.

58. With regard to Russia, there is very limited published information available as the Russian producers have not been making available such information public. Nevertheless, the petitioner has been able to trace at least one producer and its capacity information. Desired information is enclosed with these submissions. It would be seen that the company is having significant 15,000 MT capacity.

59. It is thus evident that the exporters are largely engaged in exports of the product concerned and dumping would intensify with revocation of anti dumping duties.

60. In view of the above, domestic industry submits that there is no reason to believe that the exporters/producers from Saudi Arabia and Russia would not continue exporting material to the Indian market in significant volumes at dumped prices. This would lead to continued dumping of the product in the market.

H.2 Examination by the Authority on Recurrence of Dumping

61. The Authority has found that imports from the subject countries were coming at the dumped prices during the period of investigation and there is no material on the record to show that the dumping would not continue. The existence of dumping margin during the original investigation and in the present review indicate that there is a possibility of continuance of the dumping from the subject countries.

H.3 Recurrence of Injury

62. Regarding recurrence of injury the domestic industry has made following submissions:

a) Vulnerability of the Domestic Industry

63. Producers/exporters from Russia and Saudi Arabia have continued to export at dumping prices. Present investigation is a review investigation and the Designated Authority is required to examine whether revocation of duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping. In this case, as there are continued dumped imports, Designated Authority is required to examine whether revocation of duty is likely to lead to continued dumping of the product. Exporters and producers from the subject countries are exporting subject products to India for the past several years. The exports are not only being made to India but also are being made to other countries. The quantity being exported by these countries to world countries is significant. In fact, Saudi export is exporting entire volumes with zero domestic sales. Apparently, producers in Russia and Saudi Arabia are having significant surplus/excess capacity of the product under consideration.

64. Continued exports even after imposition of duty clearly show that the export volumes would at best increase after revocation of duty. There is no reason to believe that exports would decline or the export price would increase after revocation of duty. Following parameters shows that dumping is likely to continue in the event of revocation of anti dumping duties.

b) Significant price undercutting by imports with current measures

65. Imports from subject country would be undercutting prices of domestic industry in the Indian market in case duty is revoked. There is a great likelihood of further injury to

the domestic industry from dumped imports as the level of price difference between imported product and domestic industry's product is too significant even when domestic industry is charging unremunerative prices.

c) Level of dumping margin

66. It has been submitted that the dumping margin is significant as per the calculation made by the domestic industry.

H.4 Examination by the Authority on Recurrence of Injury

67. The Authority has already found the existence of material injury to the domestic industry and in view of the merits in the arguments of the domestic industry about vulnerability of the domestic industry, significant price undercutting and level of dumping margin, the Authority is of the view there is a possibility of continuance of injury because of dumping of the subject goods in case the anti-dumping duty is withdrawn on the subject goods.

I. FINAL FINDINGS

68. The Authority after considering the foregoing concludes that:

- a. Subject goods originating in or exported from subject countries have been exported to India below their normal value, resulting in dumping;
- b. The domestic industry has suffered material injury due to dumped imports;
- c. And discontinuation of anti-dumping duties on the subject goods from subject countries may result in continuance of dumping and continuance or intensification of injury to the domestic industry.

J. Indian industry's interest & other issues

69. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the product in India. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply

70. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

K. Recommendations

71. In view of positive determination of likelihood of dumping and injury on account of imports from subject countries the Authority is of the opinion that continuation of the measure is required against imports from subject countries. However, considering the current level of dumping from subject countries and injury suffered by the domestic industry, the Authority is of the opinion that the measure in force needs to be revised. Therefore, Authority considers it necessary and recommends anti-dumping duty on imports of subject goods from subject countries in the form and manner described hereunder.

72. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the margin of dumping or margin of injury whichever is lesser, so as to remove the injury to the domestic industry. The Authority recommends continuation of definitive antidumping duty, on all imports of subject goods originating in or exported from Russia and Saudi Arabia, as indicated in Col 8 of the table below.

Sl. No.	Tariff Item	Description of Goods	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measurement	Currency
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	29212901	Hexamine	Russia	Russia	Any	Any	201.70	MT	US\$
2.	29212901	Hexamine	Russia	Any other than Russia	Any	Any	201.70	MT	US\$
3.	29212901	Hexamine	Any other than subject country	Russia	Any	Any	201.70	MT	US\$
4.	29212901	Hexamine	Saudi Arabia	Saudi Arabia	Any	Any	145.29	MT	US\$
5.	29212901	Hexamine	Saudi Arabia	Any other than Saudi Arabia	Any	Any	145.29	MT	US\$
6.	29212901	Hexamine	Any other than subject country	Saudi Arabia	Any	Any	145.29	MT	US\$

73. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

74. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

R. GOPALAN, Designated Authority